



### SHRI MAGUNI CHARAN KUANR

Shri Maguni Charan Kuanr, a renowned Puppeteer from Keonjhar, is very popular in Odisha and outside as well for his enchanting puppet shows. He learned this art form from Guru Makardhwaja Behera at the age of 15 successfully and he formed a cultural party named as 'Utkal Biswakarma Kalakunja' for puppet dance and performed throughout the Nation.

2. Born on February 12<sup>th</sup>, 1937, Shri Kuanr faced several challenges, mostly financial, from the beginning till today. He lost his wife as he was unable to provide medicines and medical treatment while she was suffering from heart disease for his puppet party. He faced many problems and have sacrificed a lot but kept this art form alive.

3. When late Shri Dhiren Pattnaik was the Secretary, Odisha Sangeet Natak Akademi, Shri Kuanr arranged his first official show 'Ravan Baddha' at Rabindra Mandap, Bhubaneswar in 80's. Since then he has been consistently performing across the State and India mostly under the aegis of State and Central Sangeet Natak Akademi. Apart from private program, he has staged puppets show at places like New Delhi, Mumbai, Kolkata, Guwahati, Meghalaya, Sikkim, Agartala, Cooch Behar, Bhopal, Shantiniketan and Asiad-1972, Bangalore (International Puppet Show) etc.

4. Shri Kuanr is a versatile artist. He prepares puppets of different character and writes scripts dialogue. He is also a wood carver, painter, script writer, clay image maker and an actor. He also performed on Geeti-natya of Baishnab Pani and Ramayan of Biswanath Khuntia. Even, now at the age of 87 years, he never sits idle. Apart from puppet making, he is still performing at different places and thereby providing entertainment to the people and promoting and propagating this traditional puppet dance with all its pristine glory.

5. Shri Kuanr is the recipient of numerous Awards and honors both inside the State and outside and brought laurels to the State. He received Odisha Sangeet Natak Akademi Award in 1984; Central Sangeet Natak Akademi Award in 2004 by Dr. A.P.J. Abdul Kalam and the State's highest award on Culture "Kabi Samrat Upendra Bhanja Sanman in 2012.



## श्री मागुणि चरन कुअँर

क्योंझर के एक प्रसिद्ध कठपुतली कलाकार श्री मागुणि चरन कुअँर, ओडिशा में और उससे बाहर अपने मनमोहक कठपुतली शो के लिए अत्यंत लोकप्रिय हैं। उन्होंने 15 वर्ष की आयु में गुरु मकरध्वज बेहरा से सफलतापूर्वक यह कला सीखी। उन्होंने कठपुतली नृत्य के लिए 'उत्कल विश्वकर्मा कलाकुंज' नामक एक सांस्कृतिक दल का गठन किया और पूरे देश में कठपुतली कला का प्रदर्शन किया।

2. 12 फरवरी, 1937 को जन्मे, श्री कुअँर ने शुरुआत से अब तक अनेक चुनौतियों, जिनमें ज्यादातर धन से जुड़ी थीं, का सामना किया है। उन्होंने अपने कठपुतली दल के लिए अपनी पत्नी को खो दिया क्योंकि वह हृदय रोग से पीड़ित थीं और वह उनके लिए दवाएं और उपचार प्रदान करने में असमर्थ थे। उन्होंने अनेक समस्याएं झेलीं और बहुत त्याग किए परंतु अपनी इस कला को जीवित रखा।

3. जब स्वर्गीय श्री धीरेन पटनायक ओडिशा संगीत नाटक अकादमी के सचिव थे, तब श्री कुअँर ने 80 के दशक में रबींद्र मंडप, भुवनेश्वर में अपने पहले आधिकारिक शो 'रावण बड्डा' की व्यवस्था की थी। तभी से वह अधिकतर राज्य और केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी के तत्वावधान में राज्य और पूरे भारत में प्रदर्शन कर रहे हैं। निजी कार्यक्रमों के अलावा, उन्होंने नई दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, गुवाहाटी, मेघालय, सिक्किम, अगरतला, कूच बिहार, भोपाल, शांतिनिकेतन और एशियाड-1972, बेंगलोर (अंतरराष्ट्रीय कठपुतली शो) आदि जैसे स्थानों पर कठपुतली शो का मंचन किया है।

4. श्री कुअँर बहुमुखी प्रतिभा के कलाकार हैं। वह विभिन्न चरित्र वाली कठपुतलियां तैयार करते हैं और पटकथा संवाद लिखते हैं। वह एक काष्ठ नक्काशीकार, चित्रकार, पटकथा लेखक, मिट्टी मूर्तिकार और एक अभिनेता भी हैं। उन्होंने बैष्णव पाणि के गीति-नाट्य और विश्वनाथ खुंटिया की रामायण पर आधारित कला प्रदर्शन किया। अभी भी 87 की आयु में वह खाली नहीं बैठते। कठपुतली बनाने के अलावा, वह वर्तमान में विभिन्न स्थानों पर प्रदर्शन कर रहे हैं, अपनी कला से लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं और इस पारंपरिक कठपुतली नृत्य के मूल स्वरूप को प्रोत्साहन और प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

5. श्री कुअँर को राज्य और उसके बाहर कई पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं और उन्होंने राज्य का नाम रोशन किया है। उन्हें 1984 में ओडिशा संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार; 2004 में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम द्वारा केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और 2012 में राज्य का सर्वोच्च सांस्कृतिक पुरस्कार "कबी सम्राट उपेंद्र भांजा सम्मान" प्रदान किया गया।